

Patent and Rights of Intellectual Property

संदर्भ –

मनुष्य अपनी बुद्धि से कई तरह के आविष्कार और नई रचनाओं को जन्म देता है। उन विशेष आविष्कारों पर उसका पूरा अधिकार भी है लेकिन उसके इस अधिकार का संरक्षण हमेशा से चंता का विषय भी रहा है। यहीं से बौद्धिक संपदा और बौद्धिक संपदा अधिकारों की बहस प्रारंभ होती है। यदि हम मौलिक रूप से कोई रचना करते हैं और इस रचना का किसी अन्य व्यक्ति द्वारा गैर कानूनी तरीके से अपने लाभ के लिये प्रयोग किया जाता है तो यह रचनाकार के अधिकारों का स्पष्ट हनन है।

जब दुनिया में बहस तेज हुई कि कैसे बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा की जाए तब संयुक्त राष्ट्र के एक अभिकरण विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (World Intellectual Property Organization-WIPO) की स्थापना की गई। इस संगठन के प्रयासों से ही बौद्धिक संपदा अधिकार के महत्व को प्रमुखता प्राप्त हुई।

इस आलेख में बौद्धिक संपदा अधिकार, उसके प्रकार, बौद्धिक संपदा के संदर्भ में भारत का नज़रिया और विश्व बौद्धिक संपदा संगठन पर वर्णन करने का प्रयास किया जाएगा।

क्या है बौद्धिक संपदा अधिकार?

- व्यक्तियों को उनके बौद्धिक सृजन के परिप्रेक्ष्य में प्रदान किये जाने वाले अधिकार ही बौद्धिक संपदा अधिकार कहलाते हैं। वस्तुतः ऐसा समझा जाता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी प्रकार का बौद्धिक सृजन (जैसे साहित्यिक कृति की रचना, शोध, आविष्कार आदि) करता है तो सर्वप्रथम इस पर उसी व्यक्ति का अनन्य बौद्धिक सृजन के लिये ही दिया जाता है, अतः इसे बौद्धिक संपदा अधिकार की संज्ञा दी जाती है।
- बौद्धिक संपदा से अभिप्राय है - नैतिक और वाणिज्यिक रूप से मूल्यवान बौद्धिक सृजन। बौद्धिक संपदा अधिकार प्रदान किये जाने का यह अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिये कि अमुक बौद्धिक सृजन पर केवल और केवल उसके सृजनकर्ता का सदा-सर्वदा के लिये अधिकार हो जाएगा। यहाँ पर ये बताना आवश्यक है कि बौद्धिक संपदा अधिकार एक निश्चित समयवधि और एक निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र के मद्देनजर दिये जाते हैं।
- बौद्धिक संपदा अधिकार दिये जाने का मूल उद्देश्य मानवीय बौद्धिक सृजनशीलता को प्रोत्साहन देना है। बौद्धिक संपदा अधिकारों का क्षेत्र व्यापक होने के कारण यह आवश्यक समझा गया कि क्षेत्र विशेष के लिये उसके संगत अधिकारों एवं संबंधित नियमों आदि की व्यवस्था की जाए।

बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रकार

- कॉपीराइट

- कॉपीराइट अधिकार के अंतर्गत कला, चित्रकला, मूर्तिकला, सनेमा, संगीत, कंप्यूटर प्रोग्राम, डाटाबेस, वज्ञापन, मान चित्र और तकनीकी चित्रांकन को सम्मिलित किया जाता है।
- कॉपीराइट के अंतर्गत दो प्रकार के अधिकार दिये जाते हैं: (क) आर्थिक अधिकार: इसके तहत व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति द्वारा उसकी कृति का उपयोग करने के बदले वित्तीय पारितोषक दिया जाता है। (ख) नैतिक अधिकार: इसके तहत लेखक/रचनाकार के गैर-आर्थिक हितों का संरक्षण किया जाता है।
- कॉपीलेफ्ट: इसके अंतर्गत कृतित्व की पुनः रचना करने, उसे अपनाने या वितरित करने की अनुमति दी जाती है तथा इस कार्य के लिये लेखक/रचनाकार द्वारा लाइसेंस दिया जाता है।

- पेटेंट

- जब कोई आविष्कार होता है तब आविष्कारकर्ता को उसके लिये दिया जाने वाला अनन्य अधिकार पेटेंट कहलाता है। एक बार पेटेंट अधिकार मिलने पर इसकी अवधि पेटेंट दर्ज की तिथि से 20 वर्षों के लिये होती है।
- आविष्कार पूरे विश्व में कहीं भी सार्वजनिक न हुआ हो, आविष्कार ऐसा हो जो पहले से ही उपलब्ध किसी उत्पाद या प्रक्रिया में प्रगति को अंगत न कर रहा हो तथा वह आविष्कार व्यावहारिक अनुप्रयोग के योग्य होना चाहिये, ये सभी मानदंड पेटेंट करवाने हेतु आवश्यक हैं।
- ऐसे आविष्कार (जो आक्रामक, अनैतिक या असामाजिक छव को उकसाते हों तथा ऐसे आविष्कार जो मानव या जीव-जंतुओं में रोगों के लक्षण जानने के लिये प्रयुक्त होते हों) को पेटेंट का दर्जा नहीं मिलेगा।

- ट्रेडमार्क

- एक ऐसा चिह्न जिससे किसी एक उद्यम की वस्तुओं और सेवाओं को दूसरे उद्यम की वस्तुओं और सेवाओं से पृथक किया जा सके, ट्रेडमार्क कहलाते हैं।
- ट्रेडमार्क एक शब्द या शब्दों के समूह, अक्षरों या संख्याओं के समूह के रूप में हो सकता है। यह चित्र, चिह्न, त्रिविमीय चिह्न जैसे संगीतमय ध्वनि या वशिष्ट प्रकार के रंग के रूप में हो सकता है।

- औद्योगिक डिजाइन

- भारत में डज़ाइन अधिनियम, 2000 के अनुसार, 'डज़ाइन' से अभिप्राय है - आकार, अनुक्रम, वन्यास, प्रारूप या अलंकरण, रेखाओं या वर्णों का संघटन जिसे कसी ऐसी वस्तु पर प्रयुक्त किया जाए जो या तो द्वितीय रूप में या त्रिविमीय रूप में अथवा दोनों में हो।
- भौगोलिक संकेतक
 - भौगोलिक संकेतक से अभिप्राय उत्पादों पर प्रयुक्त चिह्न से हैं। इन उत्पादों का विशेष भौगोलिक मूल स्थान होता है और उस मूल स्थान से संबद्ध होने के कारण ही इनमें विशेष गुणवत्ता पाई जाती है।
 - विभिन्न कृषि उत्पादों, खाद्य पदार्थों, मदिरापेय, हस्त शिल्प को भौगोलिक संकेतक का दर्जा दिया जाता है। तिरुपति के लड्डू, कश्मीरी केसर, कश्मीरी पश्मीना आदि भौगोलिक संकेतक के कुछ उदाहरण हैं।
 - भारत में वस्तुओं का भौगोलिक संकेतक अधिनियम, 1999 बनाया गया है। यह अधिनियम वर्ष 2003 से लागू हुआ। इस अधिनियम के आधार पर भौगोलिक संकेतक टैग यह सुनिश्चित करता है कि पंजीकृत उपयोगकर्ता के अतिरिक्त अन्य कोई भी उस प्रचलित उत्पाद के नाम का उपयोग नहीं कर सकता है।
 - वर्ष 2015 में भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई 'उस्ताद योजना' के माध्यम से शिल्पकारों के परंपरागत कौशल का उन्नयन किया जाएगा। उदाहरण के लिये बनारसी साड़ी एक भौगोलिक संकेतक है। अतः उस्ताद योजना से जुड़े बनारसी साड़ी के शिल्पकारों के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण की अपेक्षा की जा सकती है।

भारतीय बौद्धिक संपदा अधिकार व्यवस्था की खामियाँ

- सामान्यतः बहुत से विशेषज्ञों का मानना है कि भारत-अमेरिका व्यापार में अपेक्षित प्रगति न हो पाने का जिम्मेदार भारत की बौद्धिक संपदा अधिकार व्यवस्था में व्याप्त खामियाँ हैं। हालाँकि इस बात में पर्याप्त सच्चाई नहीं है, लेकिन फिर भी इसी बहाने हमारे पास भारत की बौद्धिक संपदा अधिकार व्यवस्था को देखने का उपयुक्त मौका है।
- ग्रामीण इलाकों में किसानों के पास पर्याप्त सूचना की कमी के चलते उन्हें ये पता नहीं चल पाता कि कौन सा कस्मिपेट के तहत आता है और कौन सा नहीं। ऐसे में अक्सर किसानों और कॉर्पोरेट्स के बीच टकराव देखने को मिलता है।

- भारत में पेटेंट करवाना जटिल कार्य हैं। हमारे पेटेंट कार्यालयों के पास शोध से जुड़ी सूचनाओं की कमी रहती हैं।
- कसी शोध का पेटेंट मंजूर करने से पहले यह जानना बहुत जरूरी होता है क वह शोध पहले से मौजूद उसी तरह के शोध से बेहतर है या नहीं। इस लहाज़ से निर्धारित समय पर पेटेंट मंजूर करवाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हैं।
- मौजूदा वक्त आर्टि फ शयल इंटेलीजेंस का हैं। अब मशीनें भी इंसानों की तरह सोचने लगी हैं। ऐसे में अगर हम बौद्धक संपदा अ धकार प्राप्त करने का आधार कला या तकनीकी कौशल को बनाते हैं, तो आने वाले वक्त में ये मशीनें ही अपने नाम पर पेटेंट करवाएंगी।
- शोध को बढ़ावा देने के लये निजी क्षेत्र को आकर्षित न कर पाना भी एक बड़ी चुनौती हैं।

बौद्धक संपदा के संरक्षण हेतु कये गए सरकार के प्रयास

- पेटेंट अधिनियम 1970 और पेटेंट (संशोधन) अधिनियम, **2005**: भारत में सर्वप्रथम वर्ष 1911 में भारतीय पेटेंट और डज़ाइन अधिनियम बनाया गया था। पुनः स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1970 में पेटेंट अधिनियम बना और इसे वर्ष 1972 से लागू किया गया। इस अधिनियम में पेटेंट (संशोधन) अधिनियम, 2002 और पेटेंट (संशोधन) अधिनियम, 2005 द्वारा संशोधन कये गए। इस संशोधन के अनुसार, 'प्रोडक्ट पेटेंट' का वस्तुतः तकनीक के सभी क्षेत्रों तक किया गया। उदाहरणस्वरूप - खाद्य पदार्थ, दवा निर्माण सामग्री आदि के क्षेत्र में इसे वस्तुतः किया गया।
- ट्रेडमार्क अधिनियम, **1999**: भारत में ट्रेडमार्क के लये ट्रेडमार्क एक्ट, 1999 बनाया गया हैं। ट्रेडमार्क एक्ट में शब्द, चन्ह, ध्वनि, रंग, वस्तु का आकार इत्यादि शामिल किया जाता हैं।
- कॉपीराइट अधिनियम, **1957**: वर्ष 1957 में कॉपीराइट अधिनियम बनाकर, बौद्धक संपदा अधिकारों की रक्षा के लये इस कानून को देशभर में लागू किया गया।
- वस्तुओं का भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999: यह कानून सुनिश्चित करता है क पंजीकृत उपयोगकर्ता के अतिरिक्त अन्य कोई भी प्रचलित उत्पाद के नाम का उपयोग न कर सके।
- डज़ाइन अधिनियम, **2000**: सभी प्रकार की औद्योगिक डज़ाइन को संरक्षण प्रदान करता हैं।
- राष्ट्रीय बौद्धक संपदा अधिकार नीति, **2016**: 12 मई, 2016 को भारत सरकार ने राष्ट्रीय बौद्धक संपदा अधिकार नीति को मंजूरी दी थी। इस अधिकार नीति के जरिये भारत में बौद्धक संपदा को संरक्षण और प्रोत्साहन दिया जाता हैं। इस नीति के तहत सात लक्ष्य निर्धारित कये गए हैं-

बौद्धक संपदा के संरक्षण में अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय

- औद्योगिक संपदा के संरक्षण जुड़ा पेरिस कंवेन्शन (1883): इसमें ट्रेडमार्क, औद्योगिक डज़ाइन आ वषकार के पेटेंट शामिल हैं।

- साहित्यिक और कलात्मक कामों के संरक्षण के लिये बर्न कंवेन्शन (1886): इसमें उपन्यास, लघु कथाएँ, नाटक, गाने, ओपेरा, संगीत, ड्राइंग, पेंटिंग, मूर्तिकला और वास्तु शिल्प शामिल हैं।
- मराकेश संध (2013): इस संध के मुताबिक किसी कताब को ब्रेल लिपि में छापे जाने पर इसे बौद्धिक संपदा का उल्लंघन नहीं माना जाएगा। इस संध को अपनाने वाला भारत पहला देश है।

आगे की राह

- भारत की इस वृद्ध को बनाए रखने के लिये भारत को अपने समग्र बौद्धिक संपदा ढाँचे में परिवर्तनकारी बदलाव लाने की दिशा में अभी और काम करने की आवश्यकता है। इतना ही नहीं मजबूत बौद्धिक संपदा मानकों को लगातार लागू करने के लिये गंभीर कदम उठाए जाने की भी जरूरत है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ की औद्योगिक विकास संस्था ने अपने एक अध्ययन के द्वारा यह प्रमाणित किया है कि जिन देशों की बौद्धिक संपदा अधिकार व्यवस्था सुव्यवस्थित वहाँ आर्थिक विकास तेजी से हुआ है। अतः यहाँ सुधार की नितांत ही आवश्यकता है।
- भारत को 'पेटेंट, डिजाइन, ट्रेडमार्क्स और भौगोलिक संकेतक महानियंत्रक' को चुस्त एवं दुरुस्त बनाने की आवश्यकता है।

